हमारा जीवन और पर्यावरण

पर्यावरण का संबध हर उस प्रश्न से है जो एक जिवीत काया को प्रभावित करता है। यह मुलतः एक बहुशास्त्रीय दृष्टीकान है जो हामरे प्राकृतीक जगत और मानव पर उसके प्रभाव को समग्रता से समझना सिखाता है। यह एक व्यवहारीक विज्ञान है क्योंकी इसका उद्देश अधिकाअधिक महत्वपुर्ण होते जा रहा है कि पृथ्वी के सीमित संसाधनो के बल पर मानव सभ्यता को कैसे जारी रखा जाए।

जीव विज्ञान, भुगर्भ विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिकी, अभियांत्रिकी, समाजशास्त्र, स्वास्थ, मानवशास्त्र, अर्थशास्त्र, सांख्यिकी, कंप्युटर और दर्शनशास्त्र, पर्यावरण जानने के विभिन्न घटक है।

हम जिन क्षेत्रो में रहते है उनके प्राकृतीक इतिहास का अध्यन करे हमें मालुम होगा की हमारे वर्तमान परिवेश अतित में प्राकृतीक भुदृष्य थे, जैसे जंगल, पर्वत, रेगीस्तान या इन सबका संयोग। हममे से अधिकांश अतीत में प्राकृतीक भूदृष्यों में रहते है, जो मनुष्यों के हाथों बहुत अधिक परीवर्तित होकर गॉवों के कस्बों और नगरो में बदल गए है। लेकिन हममे से जो लोग नगरवासी है उनेका भी खाद्य पदार्थ आसपास के गाँवों से मिलते है, और ये गाँव भी कृषी के लिए जल, ईंधन की लकडी, चारा और मछलियों जैसे संसाधनों के लिए जंगलों, घास के मैदानों, नदियों, समुद्र तटों जैसे प्राकृतीक भुदृष्यों पर निर्भर है। इस तरह हमारे रोजमर्रा के जीवन का हमारे परीवेश में अटुट संबध है और इससे हमारा परीवेश प्रभावित भी होता है। हम पीने के लिए और रोजमर्रा के दुसरे कामों के लिए पानी का उपयोग करते हैं। हम हवाँ में साँस लेते है। हम ऐसे संसाधनों का उपयोग करते है। जिससे हमारा भोजन बनता है और जीवित पेड-पौधों और जीवों के समुदाय पर निर्भर है। जिनसे जीवन का जाल बनता है जिसके अंग हम भी है। हमारे इर्द-गिर्द की हर चीज हमारा पर्यावरण है और हमारा जीवन उसे यथासंभव सुरक्षित रखने पर निर्भर है।

प्रकृती पर हमारी निर्भरता इतनी अधिक है कि पृथ्वी के पर्यावरणीय संसाधनों की रक्षा किए बिना हम जीवित नही रह सकते। इसीलिए अधिकांश संस्कृतियाँ पर्यावरण को 'मॉ प्रकृति कहती है और अधिकांश परंपरागत समाज जानते है कि प्रकृति का सम्मान करना उनकी अपनी जीविका की रक्षा के लिए कितना आवश्यक है। इससे ऐसे अनेक सांस्कृतिक कार्यकलाप विकसित हूए है जिन्होने परंपरागत समाजो का उनके प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण मे सहायता दी है। भारत में प्रकृति और सभी जीवीत प्राणियों का ध्यान रखना कोई नई बात नही है, हामरी तमाम परंपराए इन्ही जीवन मुल्यों पर आधारित है। सम्राट अशोक के शिलालेखो में कहा गया है कि जीवन के सभी रूप हमारे कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है, और यह बहुत पहले, चौथी सदी इसा-पूर्व की बात है।

लेकिन पिछले दो सौ वर्षा मे आधुनिक समाज यह मानने लगे है कि प्रौधागिक नवप्रवर्तनो का बेलगाम करके अधिकाअधिक संसाधन जुटाने के प्रश्न का आसान समाधान निकाला जा सकता है। कुछ उदाहरण है; कृत्रिम का विकास करना, विशाल काय बाँधो से खेतों को सीचना और उद्योगो का विकास करना। इन सब का परीणाम है तीव्र आर्थिक संवृद्धि लेकिन इस तरह के अविचारित विकास ने स्वाभाविक रूप से पर्यावरण को क्षति पहुचाई है।

हमारे अधिकाधिक उपभोगमुर्ख समाज के लिए वस्तूओं की आपुर्ति करनेवाले औद्योगिक विकास और गहन कृषी, बड़ी मात्रा में जल खनिज, पेट्रोलियम उत्पादों और लकडी आदि प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग कर रहें है। खनिज और तेल जैसे अनवीकरणीय संसाधन ऐसा है कि अगर हम भावी पीढ़ीयों का ध्यान रखे बिना इनका दोहन करते रहे तो ये भविष्य में समाप्त हो जायेंगे इमारती लकडी और जल जैसे नवीकरणीय संसाधन वे है जिनका उपयोग किया जाता है। पर उन्हे पुनर्वृध्दि या वर्षा जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाएँ फिर से पैदा कर सकती है। लेकिन प्रकृति जिस गति से उन्हें पैदा करती है उससे तीव्रतर गतिसे हम उनका उपयोग करते रहे तो ये चुक जाएँगे। उदाहरण के लिए, किसी जंगल में पेडों के उगने और उनके बढने की गति से अधिक तेजी से हम इमारती और जलावन लकडी लेते रहे तो लकडी की आपूर्ति की भरपाई नही हो सकती। जंगलाती क्षेत्र की हानी से न सिर्फ जंगलो के संसाधनो, जैसे इमारती लकडी और लकडी से भिन्न दुसरी वस्तुओं की ही हानि नहीं होती, उससे हमारे जल संसाधन भी प्रभावित होते हैं क्योंकि एक सही-सलामत प्राकृतिक वन एक स्पंज की तरह काम करता है जो वर्षाकाल में जल को सोखता है और सुखे मौसमों में धीरे-धीरे उसे छोडता जाता है। इसके अलावा वनविनाश से मानसुन काल में बाढ आती है और वर्षाकाल के समाप्त होने के बाद नदियाँ सुख जाती है।

हमारे प्राकृतिक संसाधनो की तुलना बैंक में जमा धन से की जा सकती है। यदि हम तेजी से उसका उपयोग करे तो पूंजी घटकर शुन्य रह जाएगी। दुसरी और, अगर हम केवल ब्याज से काम चलाएँ तो वह और अधिक समय तक हमारे काम आएगी। इसे ही निर्वहनीय उपयोग या विकास कहते है।

पर्यावरण कोई एक विषय नही हैं, यह अनेक विषयोंका मेल है जिनमें विज्ञान और सामाजिक अध्ययन दोनो शामिल है अपने पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए हमें जीव विज्ञान, रसायन भौतिकी, भुगोल, संसाधन प्रबंध, अर्थशास्त्र और जनसंख्या के प्रश्नो को समझना होगा। इसतरह पर्यावरण अध्ययन का विषयक्षेत्र अत्यंत व्यापक है और यह लगभग हर प्रमुख शास्त्र के कुछ पहलुओं को समेटता है।

हम ऐसी दुनिया में रहते है जिसमें प्राकृतिक संसाधन सीमित है और मवेशियो से मिलने वाली वस्तुएँ ये सभी हमारी जीवन रक्षक व्यवस्थाओं के अंग है। जैसे-जैसे हमारी जनसंख्या बढेगी और हममे से हर एक व्यक्ति द्वारा संसाधनो का उपयोग भी बढ़ेगा, तो पृथ्वी के संसाधना का भंडार लाजमी तौर पर कम होगा। यह आशा नही की जा सकती कि पृथ्वी संसाधनो के उपयोग के इस बढते स्तर का भार उठा पाएगी। इसके अलावा संसाधनो का दुरूपयोग भी होता है। प्रकृती के स्वच्छ जल को हम बडी मात्रा में बरबाद या प्रदुषित करते है; हम प्लास्टिक जैसी वस्तुएँ अधिकाधिक बना रहे है। जिनको एक बार उपयोग करके फेक दिया जाता है। हम विशालमात्रा में खाना बरबाद करते है जिसे कचरे के ढेर में फेंक देते है। विनिर्माण की प्रक्रियाएँ ठास अपशिष्ट पदार्थ पैदा कर रही है, और ऐसे रसायन भी जो द्रव अपशिष्ठ की तरह बहकर जल को प्रदुषित करते है। और हवा को प्रदुषित करने वाली गैस भी। अपशिष्ठ की इस बढती मात्रा का प्रबंध प्राकृतिक प्रतिक्रियाएँ नही कर सकती। इस तरह अपरिष्ठ हमारे पर्यावरण में जमा होने लगते है, जिससे अनेक प्रकार के रोगों और जल प्रदुषण पेट के रोगों को जन्म देते है। अनेक प्रदुषक कैंसर का कारण भी बनते है।

इस स्थिती में सुधार तभी होगा जब हममेंसे हर व्यक्ति रोजमर्रा के जीवन में ऐसे कार्य करे जो हमारे पर्यावरण के साधनों के संरक्षण में सहायक हो। अकेली सरकार से हम पर्यावरण की सुरक्षा की आशा नही कर सकते न ही दूसरे व्यक्तियोंसे पर्यावरण की हानि रोकने की आशा कर सकते है। इसे हमे खुद ही करना होगा। यह ऐसी जिम्मेदारी है जिसको हममें से हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी मानकर स्वीकार करना होगा।

अनिल जांभुळकर
अध्यक्ष,
जनकल्याण बहुउद्देशिय संस्था,
रामटेक